मानव क्षुद्र का नहीं विराट का वरण करे

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,

पूर्व कुलपति सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

क्षुद्र का अर्थ है छोटा, निम्न, नकारात्मक और विराट का अर्थ है बड़ा, ऊँचा और सकारात्मक। मानव जन्मजात स्वार्थी प्रवृत्ति का होता है। समाज में या परिवार में जैसा संस्कार बच्चे को दिया जाता है वैसा ही वह हो जाता है। संस्कार का मानव जीवन पर बहुत असर पड़ता है। मानव में क्षुद्रता नहीं विदारता आनी चाहिए। महाभारत में भगवान श्रीकृष्ण ने अर्जुन को अपना विराट रूप दिखलाया। युद्ध में कौरव और पाण्डव दोनों पक्षों के लोग उन्हें एक साधारण मानव ही मानते थे। उनके भगवत्ता का ज्ञान किसी को नहीं था। जब उन्होंने अर्जुन के मोह को दूर करने के लिए अपना विराटरूप दिखलाया तो अर्जुन को यह ज्ञान हुआ कि सम्पूर्ण विश्व कृष्ण में समाया हुआ है। विराटरूप देखने के बाद अर्जुन का मोह दूर हुआ और वह अपने कर्त्तव्य पथ पर चलने के लिए दृढ़ निश्चय हुये। नकारात्मक दृष्टि वाला व्यक्ति क्षुद्र प्रवृत्ति का होता है। वह दूसरों की निन्दा और ईर्श्या करता है। ऐसा व्यक्ति दूसरों के अच्छे गुणों को भी ग्रहण न करके उसके अवगुणों को ही ग्रहण करता है। मानव को दूसरों से अच्छाई ग्रहण करनी चाहिए बुराई नहीं। मानव अच्छाई और बुराई दोनों का पुतला है। समय–समय पर दोनों ही गुण उससे प्रकट होते हैं। इसलिए सज्जन व्यक्ति हर जगह अच्छाई ही देखता है और अच्छाई ही ग्रहण करता है। दुर्जन व्यक्ति सर्वत्र बुराई ही ग्रहण करता है–

बुरा जो देखन मैं चला बुरा न मिलया कोय।

जो दिल खोजा आपना मुझसे बुरा न कोय।।

मनुष्य को बुराई नहीं बल्कि अच्छाई खोजनी चाहिए। क्षुद्र मानव को दूसरों के अच्छे गुण भी बुरे लगते है। क्षुद्र व्यक्ति एक दूसरे से ईर्ष्या, डाह, बुराई ही ग्रहण करता है। विराट सोच का व्यक्ति दुःख में से सुख निकाल लेता है। उसका उद्देश्य परोपकार और परकल्याण होता है।

क्षुद्र सोच का व्यक्ति छोटी–छोटी बातों में लड़ाई–झगड़ा करता है। घर का मुखिया परिवार के सभी सदस्यों के बारे में सोचता है और सबका कल्याण करता है। पहले के लोग अनुशासन प्रिय होते थे। नियमों का स्वयं पालन करते थे और यह अपेक्षा रखते थे कि सभी नियमबद्ध तरीके से अपना कार्य करें। स्व और परकल्याण की भावना अच्छे व्यक्ति में होती है। जब चिन्तन सकारात्मक होता है तो सबका साथ सबका विकास होता है। परोपकार की भावना, सामूहिक हित चिन्तन की कामना करना सज्जनों का काम है। स्वयं सत्य खोजना चाहिए और सभी प्राणियों के साथ मैत्री भाव रखना चाहिए। क्षुद्र व्यक्ति सम्बन्ध तोड़ता है और विराट व्यक्तित्व का व्यक्ति सम्बन्ध जोड़ता है। सम्बन्ध एक बार टूट जाने पर बड़े मुश्किल से जुड़ता है–

रहिमन धागा प्रेम का, मत तोड़ो चटकाय

टूटे पर फिर ना जुड़े, जुड़े गांठ पड़ जाय

मानव जीवन में प्रेम मैत्री और सद्भाव अच्छे गुण है। प्रेम स्वाभाविक होता है इसमें लेनदेन नहीं चलता। माता–पिता का पुत्र के प्रति, गुरु का शिष्य के प्रति स्वाभाविक प्रेम होता है। बाल्यावस्था में माता अनेक कष्टों का सहकर अपने विराट व्यक्तित्व का परिचय देते हुये पुत्र का लालन पालन करती है। इसी प्रकार पशुओं में भी प्रेम की यह परम्परा देखी जाती है। हरिणी अपने सद्योजात बच्चे के लिए सिंह का सामना करने के लिए भी तैयार रहती है। यद्यपि वह जानती है सिंह एक ही वार में उसका प्राण पखेरू नष्ट कर देगा, किन्तु अपने जीते वह अपने बच्चे की सुरक्षा करती रहती है। यह स्वाभाविक प्रेम है और उसके विराट व्यक्तित्व का उदाहरण पशुओ, पक्षियों, मानव सभी प्राणियों में अपने बच्चे के प्रति यह प्रेम देखा जाता है। रामचरित मानस में शबरी का प्रसंग, केवट का प्रसंग स्वाभाविक प्रेम का उदाहरण है। शबरी जाति की भिलनी थी, किन्तु भगवान राम के चरणारबिन्द में उसका स्वाभाविक अनुराग था। वह सैदव राम–राम रटा करती थी। उसे यह विश्वास था कि एक दिन भगवान राम उसके द्वार पर अवश्य आयेंगे। शबरी के प्रेम ने भगवान राम को आकर्षित किया। प्रेम में वह विराट शक्ति होती है कि वह किसी को भी अपनी तरफ खींच लेता है। केवट प्रसंग में भी

केवट का यही प्रेम भगवान राम के प्रति देखा जाता है। केवट भी भगवान राम के चरणारबिन्द में अटल अनुराग रखता था। भगवान राम के विराट व्यक्तित्व के दर्शन से वह तृप्त हो गया। भगवान राम ने उसका उद्धार किया। इस समय विश्व में लगभग सात अरब जनसंख्या है। यदि सभी प्रेम और परोपकारिता का पाठ पढ़ लें तो आतंकवाद, भ्रष्टाचार, सम्प्रदायवाद, नक्सलवाद समाप्त हो जाये। जब प्रेम का नाता जुड़ता है तो कटुता अपने आप समाप्त हो जाती है। प्रेम भी इसी प्रकार का है। उसमें हजारों दुर्गुणों को दूर कर सद्‌गुण लाने की क्षमता है। महाभारत के एक प्रसंग के अनुसार जब भगवान श्रीकृष्ण अपने विराट व्यक्तित्व का परिचय देते हुये संधि का प्रस्ताव लेकर कौरव पक्ष में गये तो दुर्योधन ने भगवान श्रीकृष्ण का स्वागत करने के लिए मेवा मिष्ठान आदि का प्रबंध किया था, किन्तु भगवान श्रीकृष्ण ने उसका त्यागकर विराट व्यक्तित्ववाले विदुर के घर केले का छिलका खाकर प्रसन्नता व्यक्त की। अतः विराट का वरण करना चाहिए क्षुद्रता का नहीं।